International Journal of Information Movement *Vol. 9 Issue III* *(July 2024)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages 27-31**

आधुनिक सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस

दीक्षा
जूनियर रिसर्च फैलो
पी एच डी हिन्दी विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र
Email: drdiksha555@gmail.com

सारांश: तुलसीदास का नाम हिंदी साहित्य में गर्व से लिया जाता है। उन्होंने अपनी महान रचना 'रामचरितमानस' में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया है। हिंदी के अनेक विद्वानों ने तुलसीदास पर कई विचार और विश्लेषण प्रस्तुत किए हैं। 'रामचरितमानस' हिंदू धर्म, संस्कृति और आचरण का मानक बन गया है। इसे लोकभाषा में लिखा गया, जिससे यह व्यापक रूप से लोकप्रिय हुआ। तुलसीदास ने राम को आदर्श पुत्र, भाई, पति, मित्र और राजा के रूप में चित्रित किया है। उन्होंने समाज की रक्षा और लोकधर्म की सुरक्षा के लिए अपनी अलौकिक शक्ति का प्रयोग किया।

मुख्य शब्द: तुलसीदास , रामचरितमानस, भारतीय संस्कृत, हिंदी साहित्य, आदर्श नैतिकता, लोकधर्म

1.0 प्रस्तावना:

रामभक्ति काव्यधारा में तुलसीदास का नाम गर्व से लिया जाता है। तुलसीदास भारत के लोकप्रिय व श्रेष्ठ कवि है। उन्होंने अपने सर्वश्रेष्ठ काव्य रामचरितमानस में भारतीय संस्कृति के प्रेरक और उज्ज्वल पक्षों को प्रेरणादायक ढंग से प्रस्तुत किया है। हिन्दी के अनेक विद्वानों द्वारा तुलसीदास पर अब तक अनेक विचार, व्याख्या व विश्लेषण प्रस्तुत किए जा चुके है। राम काव्य परंपरा में उनके ग्रंथ मील का पत्थर साबित हुए हैं। 'रामचरितमानस' हिन्दु धर्म, संस्कृति, आचार–विचार का मापदंड बन गया है। यह ग्रंथ जितना लोकप्रिय हुआ है, उसकी कोई समता नहीं है।

'रामचरितमानस' संपूर्ण हिन्दी वाङ्मय की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है। अवधी भाषा में लिखी गई इस प्रबंधात्मक कृति के रचनाकाल का जिक्र तुलसीदास ने स्वयं कर दिया है। तुलसीदास ने इसके लेखन का प्रारंभ संवत् 1631 1574 ई., में किया। इसके लेखन का कार्य दो वर्ष, सात महीने तथा छब्बीस दिन में पूरा हुआ। तुलसीदास ने अपनी रचना में भक्ति निरूपण के साथ ही पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक जीवन की मर्यादा एवं आदर्श को प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त लोक जीवन के सांस्कृतिक पक्ष के समुच्चय को भी तुलसीदास ने अपनी इस महान रचना में पिरोया है।

तुलसी युगदृष्टा कवि थे या कहे अपने समय से आगे देखने वाले रचनाकार। उन्हें आने वाले समय का भान था। जिस तरह से आज अस्त्र– शस्त्र की होड़ मची हुई है। जो जितना परमाणु बम रख ले वह उतना बड़ा आँका जाता है।

गोस्वामी जी ने स्पष्ट कर दिया था कि यदि सच्ची विजय पाना है, मानवता को विजयी बनाना है तो उसके लिए जिस रथ की जरूरत होगी वह मूल्यों से सुसज्जित रथ होगा। वरिष्ठ आलोचक शंभुनाथ के शब्दों में इन्हें व्यक्त करें तो – 'इस बिन्दु पर तुलसी द्वारा वर्णित युद्ध का वास्तविक अर्थ उजागर हो जाता है। एक पक्ष में मानव– मूल्यों से हीन भोगवाद की राक्षस–संस्कृति और विपक्ष में उच्चतर मूल्यों से संपन्न मानव संस्कृति। राम रावण की द्वंद्वात्मक भौतिकवादी तत्वों से तटस्थ नहीं रह सकती थी। यह जीवन मूल्यों की लड़ाई थी। अपने युग की लोक आकांक्षाओं से दीप्त आदर्शों को देश–काल में न पाकर तुलसी ने उनकी आध्यात्मिक दुनियाँ रची।'[1] तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि उनका यह महाकाव्य इन शाश्वत् जीवन मूल्यों का आकाशदीप है तथा 'मानस' में इनका क्षेत्र सीमित नहीं है, अपितु उनमें वैश्विक दृष्टि है, तथा इनके माध्यम से मानव मात्र के कल्याण की कामना है । 'रामचरितमानस' युगवाणी है जो आधुनिक काल में भी उर्ध्वगामी जीवनदृष्टि एवं व्यवहार धर्म तथा विश्वधर्म का संदेश देती है

''आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार बालकाण्ड से लंकाकाण्ड तक रामचरितमानस लोकमंगल की साधनावस्था का काव्य है और उतरकाण्ड सिद्धावस्था का। श्रीराम का वनवास काल में सामान्य जनों के सम्पर्क में आकर उनके सुख – दुख का सहभागी बनना, धरती को अन्यायकारी आसुरी शक्तियों से मुक्त करने का संकल्प व संघर्ष, निजी स्वार्थ से परे सबके प्रति सम्यक् आचरण का निर्वाह तथा राजमद से रहित शौर्य, शील, समता, धैर्य, विवेक, क्षमा, दया, परोपकार जैसे मानवीय सदगुणों का निरन्तर विकास– यह है बालकाण्ड से लेकर लंकाकाण्ड तक राम के शासकीय चरित्र निर्माण की दीर्घकालीन प्रक्रिया– लोकमंगल की साधना– वस्था का प्रदीर्घ – प्रशिक्षण करता है।[2] मूल्यों के लिए जीने वाला व्यक्ति समाज के लिए मर मिटने वाला व्यक्ति समाज के लिए खड़ा होने वाला व्यक्ति किसी सत्ता का मोहताज नहीं होता है, बड़ी से बड़ी शक्ति को उसकी औकात बता देता है। क्योंकि उसकी जड़ में लोकजनमानस होता है। आधुनिक युग में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने जिस तरह से बिना किसी अस्त्र–शस्त्र के अंग्रेजी साम्राज्यवाद को समाप्त किया उसके स्रोत में तुलसी ही है जिन्होंने 'अकबर' जैसे शहंशाह को भी आईना दिखा दिया।

''हम चाकर रघुवीर के पटी लिखौं दरबार ।
तुलसी अब क्या होंहिंगे नर के मनसबदार ।।''

गोस्वामी जी द्वारा रचित रामचरितमानस एक अनुपम एवं कालजयी कृति है जिसका स्थान साहित्य की दृष्टि से भी सर्वोपरि है। इसके काण्डो का नामकरण इनके अर्थ को दर्शाता है। बाल काण्ड भगवान के बाल रूप व लीलाओं का वर्णन किया गया है।

तुलसीदास ने रामचरितमानस मे राम के बारे में बताया है – ''तुलसी ने राम को एक आदर्श पुत्र, आदर्श भ्राता आदर्श

पति, मित्र तथा आदर्श राजा के रूप में चित्रित करते हुए जीवन के विविध क्षेत्रों में उनके अनुपम शील की सुंदर अभिव्यक्ति की है। समाज की मर्यादा एवं लोकधर्म की रक्षा के लिए वे अपनी इस असीम शक्ति का प्रयोग करते हुए दिखाई देते है।

''निशिचर हीन करों, महीं भुज उठाई प्रन कीहां।''

दुष्ट राक्षसों के अत्याचारों से पीड़ित मानव समाज की रक्षा की।[3]

आज सारे विश्व में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को प्रश्रय दिया जा रहा है, कथित रूप से लोकतान्त्रिक न होते हुए भी गो० तुलसीदास राजतंत्रीय ढाँचे को ही अधिकाधिक जनोन्मुखी और सर्वकल्याणकारी बनाने का प्रयत्न करते हुए 'जनोन्मुखी राजसता' की पक्षधरता सिद्ध करते है। एक आदर्श राजा के रूप में भी राम तथा एक आदर्श राज्य के रूप में रामराज्य की उनकी परिकल्पना की परिधि में व्यक्ति, परिवार, समाज, राज्य और विश्व का कल्याण समाविष्ट है जहाँ, धर्म की संकुचित अवधारणा नहीं, वरन सत्य ही धर्म है।

''धरम न दूसर, सत्य समाना ।''

शिक्षा जो मनुष्य के विकास हेतु उसकी अप्रकट संभावनाओ को उत्तरोत्तर दिशा प्रदान कर उसे अपने चरम लक्ष्य तक पहुँचाती है, उस पर सभी वर्णों, वर्गों जातियों व समुदायों का समान अधिकार होना चाहिए। अतः रामराज्य में सबके लिए शिक्षा का प्रावधान है। सभी गुणी, विद्वान तथा ज्ञानी हैं–

''सब गुनग्य पंडित सब ज्ञानी ।''

तुलसी दास वर्ण के माध्यम से समाज पर व्यवस्था कायम करना चाहते थे, समन्वय स्थापित करना चाहते थे। तुलसीदास जी ने कहा है कि – ''श्रीराम द्वारा अहिल्या को शिला से देवी बनाना, निषादराज को गले लगाना, शबरी के आश्रम में जाकर उसके जूठे बेर खाना, वानर संस्कृति के नायक सुग्रीव को अपनाना, विधर्मी विभीषण को अपनाना आदि प्रकरण इस बात के साक्षी है कि श्री राम ने सभी जातियों, प्रजातियों तथा तबकों के लोगों के साथ समता का भाव प्रदर्शित किया तथा उसके द्वारा गरीबी और विषमता के उन्मूलन का सार्थक प्रयास किया था ।''[4]

तुलसी के लिए मानुष–सत्य और मानवमूल्य सबसे महत्त्वपूर्ण था अन्य कोई चिन्ता नहीं थी। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की–

''धूत कहौ अवधूत कहौं, राजपूत कहौ,
जुलहा कहौ कोऊ,
काहू की बेटी सो बेटा न ब्याहब, काहू की जाति
बिगारि न सोऊ।।''

''आज हम आस्था की बात करते है, अस्मिता की बात करते हैं, स्वाभिमान की बात करते हैं, अकुंठित मानव चेतना की

बात करते हैं और अपने परिवेश में उसे न पाकर निराश और विक्षुब्ध होते है। बड़ी–बड़ी बातें करते हुए छोटी से छोटी बातों पर, छोटे–छोटे प्रलोभनों पर हम बिक जाते है। व्यवस्था हमें सरलता से खरीद लेती है, हम व्यवस्था के ढोल बन जाते है। फिर मुक्तिबोध को उद्धृत करूँ तो लाभ–लोभ से प्रेरित समझदारी हमें रावण के घरों में पानी भरने को विवश कर देती है।[5]

लेकिन तुलसी मुल्यबोध के सहारे चलते रहे, व्यवस्था के ढोल नहीं बने निर्द्वन्द्व मंदिर में सोते रहे, मस्जिद में भी सोते रहे। तुलसी मुगलों के शासन काल में रामराज्य का मॉडल पेश कर रहे थे, यह बडे हिम्मत एवं निर्भीकता की बात है। आज लोकतंत्र है फिर भी हम दुम हिलाने से बाज नहीं आते। अन्तर सिर्फ इतना है कि तुलसी की दृष्टि में लोककल्याण था, हमारी दृष्टि में स्वकल्याण है, औद्योगीकरण की अंधी दौड़, नगरीकरण के अबाध विस्तार, अति मशीनीकरण के अभिशाप व वैज्ञानिक संसाधनों के दुरुपयोग के कारण आज सम्पूर्ण विश्व की प्राकृतिक सम्पदाओं, पर्यावरण तथा मानवेतर प्राणियों का अस्तित्व संकट में है। मनुष्य समाज अपनी अतिरिक्त अधिकार भावना, प्राकृतिक संपदा संदोहन की अबाध व विनाशी प्रेरणा और मानवेतर प्राणी समाज के प्रति अपनी जघन्य हिंसा भावना के कारण मनुष्य अपने आस–पास के परिवेश को दूषित करता हुआ सामूहिक आत्मघात की राह पर अग्रसर है। तुलसीदास मध्ययुग में ही मनुष्य की इस आत्मविनाशी वृति का पूर्वानुमान कर चुके थे। इसलिए रामराज्य प्रसंग में मानव समाज के स्वस्थ आचरण द्वारा मनुष्य, प्रकृति तथा मानवेतर प्राणियों के मध्य समरस तथा संतुलित संबंध की उपादेयता को चित्रित किया

''सागर निज मरजादा रहहीं, डारहिं रत्न तटहिं नर लहहिं।
बिधु महि पूर मयूरवन्हि रवि तप जितनेहि काज।
मांगें बारिद देहिं जल रामचन्द्र के राज ।।''

रामचरितमानस में सर्वत्र विश्वजनीन अनुभवों, सार्वभौमिक सत्यों एवं सार्वकालिक मानवीय संवेदनाओं की विशद अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। इस महाकाव्य के अनुसार तुलसी ने मध्यकाल में ही वे सब बाते बता दी थी जो आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साफ झलकती है। रामचरित मानस के उपसंहार तक आते–आते उन्होंने निश्चय ही सम्पूर्ण विश्व, सम्पूर्ण मानव जाति को अपनी चिन्ता एंव विचारण का विषय बनाया है। उतरकाण्ड में वे उन मानसिक रोगो–मोह, लोभ क्रोध, असीमित कामनाएं, ममता, ईर्ष्या, अहंकार, कपट, तृष्णा आदि की चर्चा करते है जो आज समस्त विश्व को आक्रान्त किए हुए है। इन रोगों की पीड़ा से मानव समुदाय की मुक्ति व विश्व कल्याण की कामना रामचरितमानस में बताई है।

इस प्रकार रामचरितमानस में श्री राम–चरित गान के साथ–साथ विश्वमंगल के निमित्त आधुनिक मानव से संबंधित प्रश्नो, समस्याओं एवं मूल्यों की चिंता का अति विशाल परिप्रेक्ष्य भी संयुक्त है।

2.0 संदर्भ सूची

1. डॉ. शिवकुमार मिश्र, भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, त्रिवेणी
3. डॉ. कृष्ण चन्देल, हिन्दी साहित्य का इतिहास
4. डॉ. शिवकुमार मिश्र, भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास